नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक :03.01.2020

प्रकाशनार्थ

(भारतीय संस्कृति की सहजता ही वैश्विक प्रसार का कारण)

प्रथम तकनीकी सत्र

भारतीय धर्म और संस्कृति का विश्व में प्रसार करने में निश्चित रूप से बौद्ध, जैन एवं ब्राह्मण परम्परा के लोगो के द्वारा प्रयास किया गया। परन्तु लोकभाषा एवं जनवाणी के माध्यम से भी विश्व के अनेक देशों में भारतीय संस्कृति का प्रसार हुआ। आधुनिक समय में विश्व के अनेक देश जहाँ गिरमिटिया वर्ग के लोग निवास करते हैं वहाँ पूर्वी उत्तरप्रदेश की लोकभाषा, कला, संस्कृति, धर्म एवं दर्शन आज भी विद्यमान हैं। वहाँ सत्यनरायण कथा भारतीय पुरोहित के द्वारा संपन्न कराया जाता है। साथ ही रामायण के प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण भी लोकभाषा के माध्यम से ही प्रसारित हुआ दिखाई देता है। यह बातें प्रथम तकनीकी सत्र के अध्यक्ष डॉ. अनुज कुमार सिंह ने कहीं। सहअध्यक्ष डॉ. रामप्यारे मिश्रा ने व्यवस्थित व संक्षिप्त शब्दों के माध्यम से भारतीय संस्कृति, लोक परम्परा, साहित्य एवं संस्कृत भाषा की सहजता एवं लोकप्रियता को व्यक्त करते हुए बताया कि यहाँ की सहज संस्कृति के कारण ही विश्व ने इसे स्वीकार किया और सनातन परम्परा न केवल भारत में अपितु संपूर्ण विश्व को अवलोकित करने में समर्थ है। विषय विशेषज्ञ डॉ. प्रेम शंकर श्रीवास्तव ने इस तकनीकी सत्र में पढ़े गये शोध–पत्रों का विश्लेषण किया, उनकी अच्छाईयों व कमियों को व्यक्त करते हुए शोधार्थियों का मार्गदर्शन किया और यह बताया कि मनुष्य और पशु में शारीरिक आवश्यकताऐं एक समान होती हैं। जबकि चित्त वह विषय–वस्तु है जो मनुष्य को पशुओं से भिन्न करते हुए प्रज्ञमानव के रूप में परिवर्तित करती है।

प्रथम तकनीकी सत्र में कुल छः शोधपत्रों का वाचन किया गया। जिसमें सबसे पहले बबिता कुमारी ने हिन्दू रिलेजन इन इण्डोनेशिया विषय पर वाचन किया। इसके पश्चात क्रमशः डॉ. विनोद कुमार (रामायण कल्चर इन साउथईस्ट ऐशिया), अम्बिका जी (विश्व में ध्यान परम्परा), प्रभाष कुमार झा (कम्बुज देश में भारतीय संस्कृति), भरत नरायण (अहिंसा एवं शान्ति का वैश्विक महत्व) और स्वामी हिमानन्द सरस्वती (भारतीय आयुर्वेद का तिब्बत में प्रसार) विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी एवं प्रतिवेदन डॉ. कन्हैया सिंह जी ने प्रस्तुत किया।

द्वितीय तकनीकी सत्र

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार) के द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता करते हुए सुशील कुमार पाण्डेय (आचार्य संस्कृत विभाग, सन्त तुलसी दास पी. जी. कालेज, कादीपुर) ने बताया कि भारतीय संस्कृति में आदिगुरू भगवान शिव को माना गया है। इस परम्परा को महायोगी गुरू श्री गोरक्षनाथ जी ने नाथपंथ के माध्यम से आगे बढ़ाया। कम्बोडिया के संस्कृत अभिलेख एवं थाईलैण्ड में नारी सम्मान की भावना को कालिदास कृत रघुवंशम में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उल्लेखनीय है कि कौडिन्य ने भारतीय संस्कृति को दक्षिण–पूर्व एशिया में प्रसारित किया। हिन्दी एवं संस्कृत

भाषाओं ने भारतीय संस्कृति को प्रवाहमान बनाने हेतु उचित वातावरण प्रस्तुत किया। परन्तु दुर्भाग्यवश राजनैतिक कारणों से हिन्दी जो आज भी राष्ट्रभाषा नहीं बनाया जा सका।

सहअध्यक्ष प्रो. दिग्विजयनाथ (आचार्य प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय) ने कहा कि भारत में निवास करने वाला प्रत्येक भारतीय है। भारतीय संस्कृति के मूल में प्रेम है जिसमें विश्व को जोड़ने का कार्य किया। हमने विश्व को 'कर्णन्ते विश्व वारियम' का संकल्प दिया। भारत के लोग जहाँ भी गये वहाँ तोड़ने के बजाय सदैव सृजनात्मक एवं रचनात्मक कार्य करते रहे। जबकि विदेशी आक्रान्ता जहाँ भी गए वहाँ तोड़ने एवं लूटने का कार्य किया। विश्व में सृजनात्मकता एवं रचनात्मकता के माध्यम से ही भारतीय संस्कृति विश्व में निर्बाध रूप से प्रवाहित हो रही है। भारत ने सदैव संपूर्ण विश्व को कुछ न कुछ दिया है। अनेक आक्रान्ताओं ने यहाँ से सोना, चांदी, धन आदि प्राप्त किया। साथ ही विदेशी धर्माचार्य इतिहासकार एवं यात्रियों ने यहाँ से ज्ञानपरक ग्रंथ एवं प्रज्ञा प्राप्त किया। पाश्चात्य जगत की अपचनीय संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को दूषित करने का कार्य किया।

विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. प्रभास कुमार झा (सहायक सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तरप्रदेश) ने सभी वाचित शोधपत्रों का संश्लेषण–विश्लेषण करते हुए प्रस्तुत कर्त्ताओं का मार्गदर्शन किया और कहा कि विश्व का कोई भी एक धर्म सभी को संतुष्ट नहीं कर सकता। जबकि भारतीय धर्म एवं दर्शन में सन्यासियों, पुरोहितों एवं धर्माचार्यो, द्वारा विविध प्रकार से भारतीय संस्कृति में समायोजन की प्रविधि को सरल बनाया। इस तकनीकी सत्र में कुल तीन शोधपत्र पढ़े गए जिसमें क्रमशः डॉ. सचिन राय (भारतीय राष्ट्रीयता का विश्व में प्रसार एवं नाथ पंथ का योगदान), डॉ. अमिता अग्रवाल (नेपाल की संस्कृति में श्रीराम एवं रामायण) और डॉ. सुमन सिंह (विश्व में हिन्दी का प्रसार) विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। इस तकनीकी सत्र का संचालन डॉ. आशुतोष कुमार त्रिपाठी एवं प्रतिवेदन डॉ. कन्हैया सिंह ने किया।

(डॉ. राहुल मिश्रा)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी